REVIEWS OF LITERATURE
ISSN: 2347-2723
IMPACT FACTOR : 3.3754(UIF)
VOLUME - 5 | ISSUE - 6 | JANUARY - 2018

अलाउद्दीन खिलजी के शासन काल में नव मुसलमानों के विद्रोह : एक सामान्य विवेचन

डॉ. नीरज कुमार गौड़
प्राचार्य – एच के एल कालेज ऑफ ऐजूकेशन, गुरूहरसहाय, फिरोजपुर (पंजाब)

सारांश
सल्तनत काल की रक्त रंजित विद्रोहों की शताब्दियों में अलाउद्दीन खिलजी के शासन काल में नव मुसलमानों के विद्रोह कोई नये नहीं थे यद्यपि इन विद्रोहो के बहुत से समाचीन कारण थे फिर भी अलाउद्दीन ने इन विद्रोहों को अति कठोरता से दमन कर आगे होने वाले विद्रोहों की अग्नि को शिथिल करने का अत्यावश्यक विफल प्रयास किया।

जालौर के निकट नव मुसलमानों का विद्रोह

अलाउद्दीन खिलजी के सिंहासनरोहण के तीसरे वर्ष अर्थात 1299 ई0* में गुजरात विजय के लिये एक सेना भेजी गयी। अभियान का नेतृत्व दो बहादुर एवं विश्वसनीय सेनानायक नुसरत खाँ और उलुग खाँ को सौंपा गया। इन दोनो सेनापतियों ने विजय के दौरान लूट मार का कार्य प्रारम्भ किया। आक्रमणकारियों द्वारा राजधानी अन्हिलबाड़ा के अतिरिक्त गुजरात के समृद्ध नगर लूटे गये। इन्होंने मंदिरों के साथ–साथ बहुत धनी व्यापारियों से नकद धन, बहुमूल्य वस्तुयें छीन ली। गुजरात लूट की पुष्टि बरनी के अलावा एसामी भी करता है। जहाँ तक हाथ पहुँच सकते थे वहाँ तक लूटमार करके भी सन्तुष्ट न होकर सैनिक वह कोष भी खोद कर ले गये जिसे गुजरात की जनता ने भूमि के भीतर छिपा लिया था।[1]
गुजरात विजय करने के पश्चात् लौटते समय कुछ नव मुसलमान सैनिक ने जालौर के निकट सुकर्णे नामक स्थान पर विद्रोह कर दिया।[2] इन नव मुसलमान सैनिकों, जो कि धर्म परिवर्तित मुगल थे, के विद्रोह करने के निम्न कारण थे–

- ❖ नव मुलमान सैनिकों ने जो लूटमार में अफगानो के समान थे लूटमार करके अपार धन सम्पत्ति अर्जित कर ली थी जिसे वह समर्पित नहीं करना चाहते थे। उलूग खाँ एवं नुसरत खाँ ने लूटपाट से प्राप्त सम्पत्ति में से राज्य का पाँचवा भाग वसूल करने के साथ–साथ उनकी खाना तलाशी की आज्ञा देकर उन्हें नाराज कर दिया।
- ❖ सैनिकों से राज्य का हिस्सा (खुम्स) प्राप्त करने के सम्बन्ध में सैनिकों की श्रेणी का ध्यान नहीं रखा गया इसके लिए उन्हें भिन्न–भिन्न प्रकार के दण्ड दिये गये।[3]
- ❖ कुछ गलती इन सैनिकों की भी है कि इन्होंने लूटी हुयी धन सम्पत्ति में से अपने आप राज्य का भाग निकालकर अलग नहीं रखा था। जब इनसे **"खुम्स"** माँगा गया तो इन्होंने सोने का भाग तो प्रस्तुत कर दिया किन्तु मोती छिपाकर रख लिये।[4]
- ❖ तारीखे मुबारकशाही के लेखक पर विश्वास किया जाये तो इन नव मुसलमान सैनिकों को धौंकनी के भीतर बन्द कर दिया गया और नमकीन पानी पीने के लिये बाध्य किया गया इतना ही नहीं इन्हें डण्डों और लातघूंसों से मारपीट कर **"खुम्स"** का अत्यधिक भाग वसूला गया जो कि इनकी व्यक्तिगत प्राप्तियाँ थी।[5]

इस प्रकार इन सैनिकों पर लूट के माल के हिस्से के पीछे जो भी अत्याचार हुआ हो, इन नव मुसलमान सैनिकों को एक बहाना मिल गया। क्योकि यह लूट के माल में से राज्य के भाग कोषागार में समर्पित नहीं करना चाहते थे। इस प्रकार इन नव मुसलमान सैनिकों ने जिनकी संख्या 2 या 3 हजार[6] थी, एसामी के अनुसार चार मंगोल अधिकारियों मुहम्मदशाह, कामरू, यलचक और बुर्राक ने जो धर्म परिवर्तित मुसलमान थे, के नेतृत्व में विद्रोह की योजना बना ली।[7]

इन धर्म परिवर्तित नव मुसलमानों का उद्देश्य उलूग खाँ की हत्या[8] करना थी क्योकि सबसे अधिक अलूग खाँ ने ही अत्याचार किये थे। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु इन्होंने एक दिन प्रातः काल के समय उलूग खाँ के शिविर पर आक्रमण कर दिया।

उलूग खाँ वहाँ उपस्थित न था। विद्रोहियों ने उलूग खाँ के अमीर हाजिब मलिक अईजुद्दीन जो कि नूसरत खाँ का भाई था मार डाला। उसी शिविर में सुल्तान अलाउद्दीन का भांजा भी सो रहा था। विद्रोहियों ने उसे भूलवश उलूग खाँ समझ कर मार डाला। उलूग खाँ जो उस समय भाग्यवश शौचालय[9] में था, भागकर नुसरत खाँ के शिविर में पहुँच गया और पूरे घटनाक्रम से उसे अवगत कराया। नुसरत खाँ और उलूग खाँ, जो कि किसी भी परिस्थिती में अपनी योग्यता व प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकते थे ने इस विषम परिस्थति में तुरन्त युद्ध के नगाड़े, बजाये जाने की आज्ञा दी। आपातकालीन युद्ध के नगाड़ो की अवाज सुनकर शाही अश्वारोही और पैदल सैनिक नुसरत खाँ के शिविर के समक्ष उपस्थित हो गये। यह वह सैनिक थे जो जोकि नव मुसलमान नहीं थे तथा इनका विद्रोह में कोई हाथ नहीं था। इन स्वामी भक्त सैनिकों ने असमय युद्ध कि नगाड़े की आवाज सुनकर तथा शोरगुल सुनकर समझा कि शायद शत्रु सेना ने अक्समात आक्रमण कर दिया है।[10]

इस प्रकार राजभक्त सैनिकों के नुसरत खाँ कि शिविर कि समक्ष उपस्थित होने से विद्रोही मुगल सैनिक भयभीत हो गये और भाग खड़े हुये। इनमें से कुछ विद्रोही यलचक तथा बुर्राक के साथ रायकरण कि पास शरण लेने पहुँचे। कामरू तथा मुहम्मद शाह ने रणथम्भौर की ओर घोड़े दौड़ाये और वहीं पर शरण प्राप्त की।[11]

इस प्रकार पूरी स्थिति चार दिनों में नियन्त्रण में आ गयी प्रारम्भ में अवश्य लगा था कि स्थिति नियन्त्रण से बाहर हो गयी है। परन्तु नुसरत खाँ एवं उलूग खाँ ने विद्रोह पर काबू पर लिया। यद्यपि यह दोनों अब भयग्रस्त हो गये थे। क्योकि अब इनकी समझ में आ गया था कि मार्ग में राज्य के हिस्से की माँग करना तथा सैनिकों के साथ बदसलूकी करना गलत था इसीलिये यह सीधे तीव्र गति से दिल्ली की ओर चले।

जब अलाउद्दीन को नव मुसलमानों के विद्रोह एवं उनके नेताओं के बच निकलने की सूचना प्राप्त हुई तो उसने अपनी निरंकुशता का प्रदर्शित करते हुये विद्रोहियों के स्त्री एवं बच्चों को कैद में डालने का आदेश दिया। जब नुसरत खाँ देहली आया तो उसने अपने भाई की हत्या का बदला विद्रोहियों के बीवी और बच्चों से निर्दयतापूर्वक लिया।

इस समय देहली की जनता ने स्त्रियों और बालकों को बन्दी बनाये जाने के अतिरिक्त नुसरत खाँ द्वारा इन लोगों पर किये जाने वाले जघन्य कृत्यों को देखा। नुसरत खाँ ने अपने भाई की हत्या का बदला लेने के लिये असहाय स्त्रियों से व्यभिचार कराये और उन्हें देहली के भंगियों को दे दिया। उनके बच्चों को इन असहाय एवं ममतामयी माताओं के समक्ष खण्ड–खण्ड करके मार डाला गया। ऐसा अत्याचार जिसे अत्याचार के भी ऊपर किसी अत्याचार की संज्ञा दी जानी चाहिये। **"किसी भी धर्म अथवा मजहब में न हुआ होगा"** इन अत्याचारों को देखकर देहली के निवासी स्तब्ध हो गये और प्रत्येक का हृदय काँप उठा।[12]

पुनः नव मुसलमानों का शडयंत्र एवं संहार

नव मुसलमान खिलजी काल में आपत्तियों का बहुत बड़ा स्रोत थे। इन्होंने अलाउद्दीन के शासन के प्रारम्भ में भी षड़यत्र रचे थे जिनका कि उलाउद्दीन ने कुशलतापूर्वक दमन कर दिया था। अब यह पुनः अलाउद्दीन की हत्या का षडयंत्र रचने लगे। इस भयंकर षडयंत्र के निम्न कारण दृष्टिगोचर होते हैं–

- ❖ नव मुसलमान अभी तक अपने आपको विदेशी समझते चले आ रहे थे और उनके मन में यह असन्तोष बना हुआ था कि धर्म एवं निवास स्थान परिवर्तन करने के बाद भी उनको यथोचित पुरस्कार एवं सम्मान नहीं दिया गया।[13]
- ❖ अलाउद्दीन ने इनको राजकीय सेवा से विमुक्त कर दिया था और इनको इनाम या वेतन जो जलालुद्दीन के समय से चले आ रहे थे कम कर दिये गये या कर्मचारियों द्वारा स्वयं हथिया लिये गये।[14]
- ❖ इनको विभिन्न राज्यों की राज्य सभा के सरदारों के यहाँ नौकरी करने की आज्ञा थी तो भी इनको भुखमरी और बेरोजगारी का सामना करना पड़ रहा था क्योकि यह सरदार भी अलाउद्दीन की नाराजगी को जानते थे।[15]
- ❖ सुल्तान अलाउद्दीन ने आबाजी मुगल की हत्या करा दी थी।[16]
- ❖ जनता भी अलाउद्दीन से परेशान थी क्योकि वह प्रजा से जबरन धन सम्पत्ति वसूल कर खजाने में भर रहा था तथा जनता को कष्ट पहुँचा रहा था। जनता उससे डरती थी तथा अन्दर दुःखी थी। नव मुसलमानों का विश्वास था कि यदि विद्रोह हुआ तो जनता उनका साथ देगी।[17]

इन सभी परिस्थितियों एवं अपनी दीन–हीन दशा के कारण नव मुसलमानों ने एक षडयंत्र की रचना की। अलाउद्दीन प्रतिदिन अपनी सैरगाह में ढीले–ढाले वस्त्र पहनकर सैर किया करता तथा बाज उड़ाया करता था। अलाउद्दीन के सभी विश्वासपात्र निशस्त्र उसके साथ रहते थे। इन पडयंत्रकारी नव मुसलमानों की याजना थी कि 200 या 300 सवार सैरगाह पर आक्रमण कर दें और अलाउद्दीन की हत्या कर दें।

इस पडयंत्र की योजना अलाउद्दीन को ज्ञात हो गयी। अलाउद्दीन ने इनसे भयंकर प्रतिशाध लेने का निर्णय लिया। उसके समक्ष राज्य के हित से सर्वोपरि कोई नहीं था इसीलिये उसने दण्ड देने में न तो सजातीयता पर ध्यान दिया ओर न ही कानून की चिन्ता की।[18]

अलाउद्दीन ने अपने सभी विश्वस्त अमीरों को आदेश दिया कि देश में एक दिन समस्त नव मुसलमानों की हत्या कर दी जाये। उसका यह आदेश निरंकुशता एवं अत्याचार से भरा था। लगभग बीस या तीस हजार[19] नव मुसलमानों, जिनमें से अधिकांश को इस षडयंत्र की भनक भी नहीं थी, हत्या कर दी गयी। इस प्रकार उनके स्त्री और बच्चे को अनाथ कर दिया या फिर दास बना लिया। तात्कालिक इतिहासकारों के अनुसार इस दानवीय संहार लीला के उपरान्त राजधानी में अथवा समीपस्थ प्रदेशों में किसी का शान्ति भंग करने का फिर कभी साहस न हुआ।

सन्दर्भ –

* इस अभियान की तिथि के संबंध में इतिहासकारों में मतभेद है। फिर भी शोध के आधार पर यही तिथि निश्चित प्रतीत होती है।
1. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 151।
फुतूहुस्सलातीन : ख्वाजा अब्दुल्ला मलिक एसामी, पृ0 252–253।
2. खिलजी वंश का इतिहास : के0एस0 लाल, पृ0 58।
3. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 152।
"खुम्स" इस्लामी नियमानुसार राज्य का हिस्सा 1/5 होता था।
4. फुतूहुस्सलातीन : ख्वाजा अब्दुल्ला मलिक एसामी, पृ0 253–54।
5. तारीखे मुबारकशाही : याहिया, पृ0 76।
6. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 252।
7. ता0मु0शाही में निम्नलिखिम मंगोल विद्रोहियों की सूची दी है : यलचक, किसरा, तमगान, मुहम्मदशाह, तमरबूगा, शादी बूगा और तुगलक बूगा।
8. फुतूहुस्सलातीन : ख्वाजा अब्दुल्ला मलिक एसामी, पृ0 254।
9. दिल्ली सल्तनत : मौ0 हबीब एवं खलिक अहमद निजामी, पृ0 290।
10. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 252।
फुतूहुस्सलातीन : ख्वाजा अब्दुल्ला मलिक एसामी, पृ0 254।
11. वही, पृ0 254।
12. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 253।
13. मध्ययुग का इतिहास : डॉ0 ईश्वरी प्रसाद शर्मा, पृ0 235।
14. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 335।
15. मध्ययुग का इतिहास : डॉ0 ईश्वरी प्रसाद शर्मा, पृ0 235।
16. फुतूहुस्सलातीन : ख्वाजा अब्दुल्ला मलिक एसामी, पृ0 298–299।
17. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 335।
18. वही, पृ0 336।
19. फुतूहुस्सलातीन : ख्वाजा अब्दुल्ला मलिक एसामी, पृ0 299।
20. एसामी ने नव मुसलमानों की संख्या उस समय 10,000 बताई है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. खाजायनुल फुतूह : अमीर खुसरो, अनुवाद प्रो0 हबीब, बम्बई 1933।
2. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, अनुवाद डॉ सैयद अतहर अब्बास रिजवी।
3. फुतूहुस्सलातीन : ख्वाजा अब्दुल्लाह मलिक इसामी, अनु0 आगा मेंहदी हुसेन, आगरा 1938।
4. तरीखे मुबारकशाही : याहिया सर हिन्दी, अनु0 के0के0 बसु।
5. तरीखे फरिश्ता : मुहम्मद कासिम फरिश्ता, अनु0 फिदाअली।
6. मिफताहुल फुतूह : अमीर खुसरो, सम्पादित एस0ए0 रशीद अलीगढ़।
7. साउथ इण्डिया एण्ड हर मौहमडन इनवेडर्स : के0एम0 अशरफ, लंदन, 1921।
8. स्टडीज इन इण्डो मुस्लिम हिस्ट्री : एस0एच0 होडीवाल, बम्बई, 1943।
9. एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द सल्तनत ऑफ देहली : आई0एच0 कुरैशी, लाहौर, 1942।
10. खिलजी वंश का इतिहास : डॉ के0एस0 लाल, द्वितीय संस्करण विश्व प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993।
11. दिल्ली सल्तनत : मौ हबीब एवं खलीक अहमद निजामी।
12. मध्ययुग का इतिहास : डॉ ईश्वरी प्रसाद।
13. जलालुद्दीन फिरोज खिलजी : शेख अब्दुर्रशींद
14. आदि तुर्क कालीन भारत : सै0अ0अ0 रिजवी।

डॉ. नीरज कुमार गौड़
प्राचार्य – एच के एल कालेज ऑफ ऐजूकेशन, गुरूहरसहाय, फिरोजपुर (पंजाब)